एकलव्य ये छापी

नाव चाली

फोटू ने वारता

वी. सुतेयेव

नाव चाली

फोदू ने वारता
वी. सुतेयेव

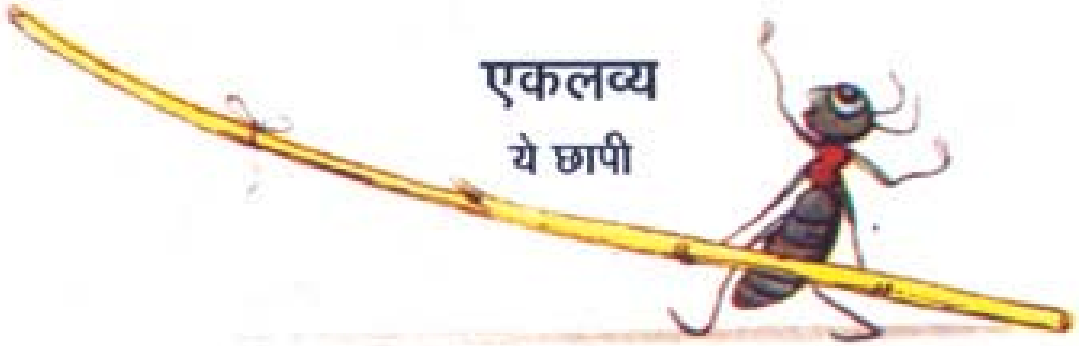

एकलव्य
ये छापी

नाव चाली

एक फोटू वाली वारता

चित्र एवं कहानी : वी. सुतेयेव

अनुवाद : के. आर. शर्मा

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की फोटू वाली वारता।
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से अंग्रेज़ी से अनुदित एवं प्रकाशित।

या किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन ने
सर रतन टाटा ट्रस्ट की पईसा की मदद से छापी।

दिसम्बर, 2000 / 1000 प्रतियाँ
कीमत रु. 10.00
या किताब हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, बांग्ला, तेलुगु, उड़िया,
छत्तीसगढ़ी, गुजराती और बुन्देली में भी मलेगा।
कुल किताब – 30,000

प्रकाशक

एकलव्य,
ई–1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल – 462 016, म. प्र.
फोन : (0755) 463380, फैक्स : (0755) 461703
ईमेल : eklavyamp@vsnl.com

भंडारी छापखाना, भोपाल में छापी।

THE BOAT

A picture story

Text and illustrations - V. SUTEYEV
Translation - K. R. Sharma

From STORIES AND PICTURES
Progressive Publishers, MOSCOW

Published with the financial assistance from
Ministry of Human Resource Development,
Government of India and Sir Ratan Tata Trust.

December, 2000 / 1000 copies
Price : Rs. 10.00
This book is also published in these languages - Hindi
Gujarati, Bangla, Telugu, Oriya, Chatteesgarhi,
Marathi, Bundeli and English, total copies 30000

Published by:
EKLAVYA
E-1/25, Arera Colony
Bhopal - 462 016 (M.P.)
Phone (0755) 463380, Fax (0755) 461703
email : eklavyamp@vsnl.com

Printed at Bhandari Offset Printers, Bhopal.

नाव चाली

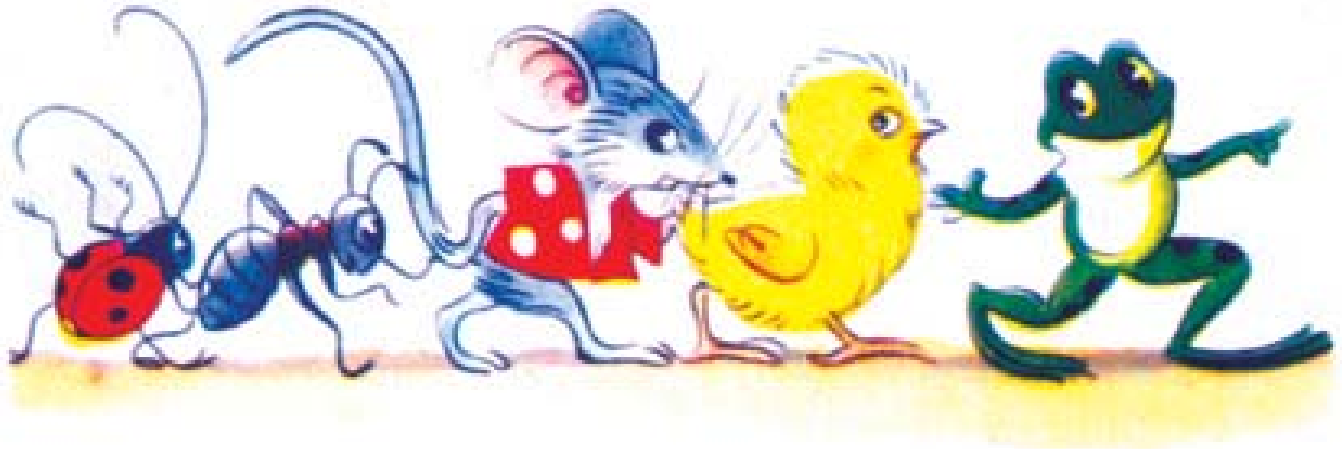

एक बखत एक डेंडको, एक मुर्गी को बच्चो, एक ऊंदरो, एक कीड़ी ने एक गोबरांदो ई सगला मली के घूमवा के निकल्या।

चालता-चालता वी सगला एक तलाव कनारे पोंच्या।

''चलो रे तरां,'' एतरो कई ने डेंडको पाणी में कूदी पड़्यो।

''पण हमारे तो तरनो नी आवे,'' ऊंदरो, मुर्गी को बच्चो, कीड़ी ने गोबरांदो बोल्या।

''ट्र्र ट्र्र ट्र्र। फेर तो तमारो यां कोई काम कोनी।'' डेंडको दांत काड़ी ने बोल्यो। ने डेंडको दांत काड़तोज ग्यो। एतरा दांत काड्या के वणी की सांस रुकवा लागी।

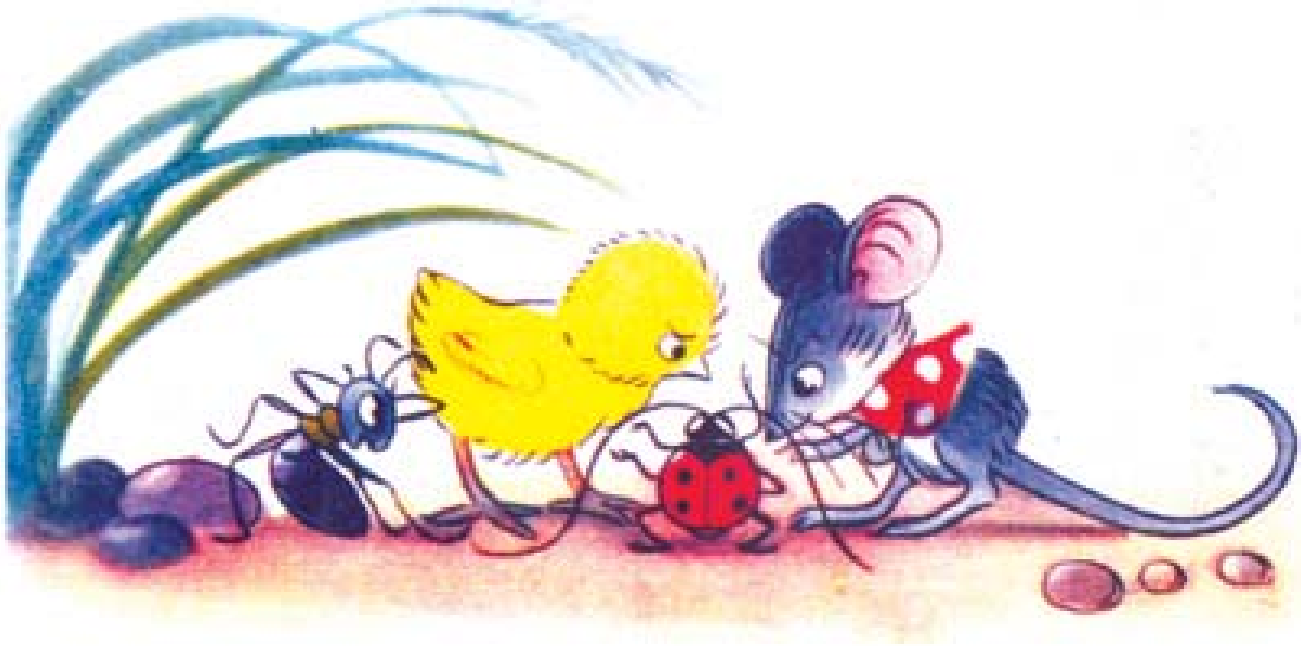

डेंडक की या गत देखी ने मुर्गी का बच्चा के, ऊंदरा के, कीड़ी के ने गोबरांदा के घणो बुरो लाग्यो। वी सोचवा लाग्या के डेंडक के बचाणो चइये।

वी सोचता ग्या, सोचता ग्या, सोचताज ग्या। ने सगला ये मली के या तरकीब खोजी।

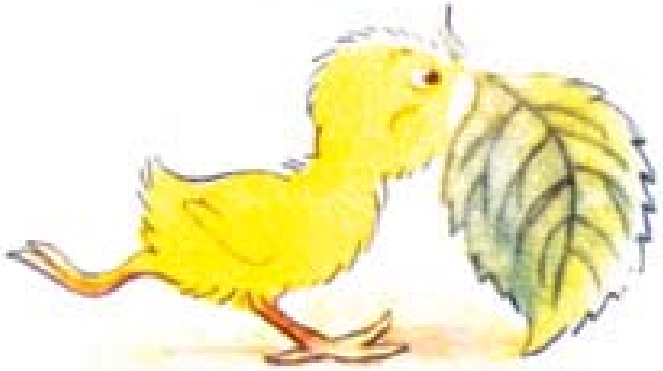

मुर्गी को बच्चो ग्यो ने
उतावल करीने झाड़का
को पत्तो तोड़ी लायो।

ऊंदरो लायो
अखरोट को
फोंतरो।

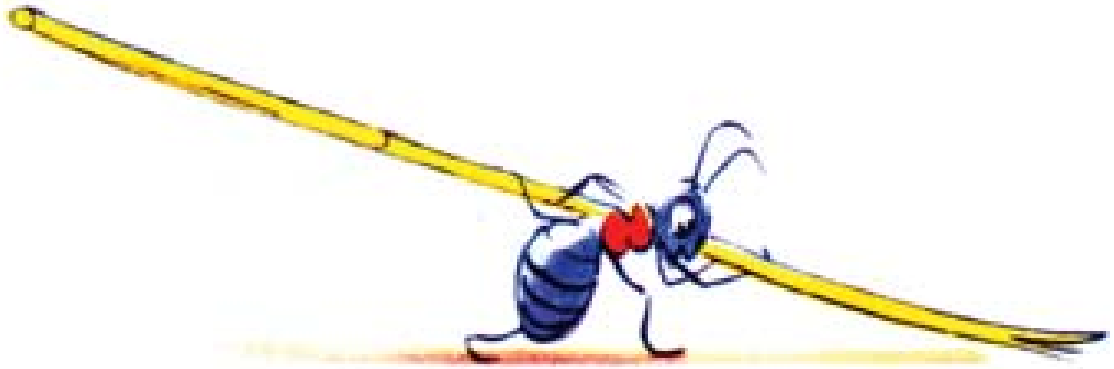

कीड़ी लई राड़ो।

ने गोबरांदो लायो कालो डोरो।

फेर वी सगला जुगाड़ भिड़ावा लाग्या। वणाये राड़ा के अखरोट का फोंतरा में फंसई दियो। ने पत्ता के डोरा से बांद्यो। थोड़ीक देर में एक खपसूरत नाव वणीगी।

वणाये नाव पाणी में छोड़ी। ने सगला बेठी ग्या नाव में।
अबे वणाकी नाव चाली पड़ी।

डेंडक ये अपणो
माथो पाणी में
से बायर हेड़यो।
ऊ पाछो दांत
काड़वाज वालो
थो, पण नाव तो
घणी-घणी दूर
जाती री थी।

एतरी दूर के ऊ वां तक पोंचीज नी
सकतो थो।

मूल्य 10 रुपए